राजन शर्मा, जालंधर

पाठ- 15

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरा

भाग-क

1. **प्रदीप ने कक्षा में प्रथम आने के लिये बहुत मेहनत की।**

2 **परीक्षा खत्म होने के बाद वह निश्चिन्त होकर सो रहा है।**

3 **नौ साल के बच्चे को दसवीं के सवाल हल करते देखकर मैं हैरान रह गया।**

भाग ख

1. **प्रदीप ने कक्षा में प्रथम आने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।**

2 **परीक्षा खत्म होने के बाद वह घोड़े बेचकर सो रहा है।**

3. **नौ साल के बच्चे को दसवीं के सवाल हल करते देखकर मैंने दाँतों तले उँगली दबा ली।**

उपर्युक्त उदाहरणों में 'भाग-क' के वाक्य साधारण तरीके से तथा भाग-ख' के वाक्य विशेष तरीके से कहे गये हैं। इसी कारण 'भाग-ख' के वाक्य 'भाग-क' के वाक्यों की अपेक्षा अधिक सशक्त व प्रभावशाली हैं।

अतएव ऐसे वाक्यांश जो विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

राजन शर्मा, जालंधर

'मुहावरा' शब्द मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'रूढ़ वाक्यांश' । अत: मुहावरे शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अपने रूढ़ अर्थ को प्रकट करते हैं।

लोकोक्ति

निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए :

यह कैसे हो सकता है कि रमेश ने कुछ न किया हो और सुरेन्द्र ने उसकी पिटाई कर दी क्योंकि सब जानते हैं कि एक हाथ से ताली नहीं बजती।

उपर्युक्त वाक्य में वक्ता कहना चाहता है कि झगड़ा दोनों तरफ से हुआ होगा अर्थात् सुरेन्द्र ने रमेश की पिटाई यूं ही नहीं की। उसने इस बात को सिद्ध करने के लिये लोक में प्रचलित उक्ति 'एक हाथ से ताली नहीं बजती' को आधार बनाया है अर्थात् जिस तरह एक हाथ से ताली नहीं बज सकती, उसी प्रकार झगड़े का कारण एक व्यक्ति नहीं अपितु दोनों हैं।

अत: लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। इसमें किसी अप्रस्तुत कथन के सहारे प्रस्तुत अर्थ को उजागर किया जाता है। लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है। इसके किसी भी शब्द को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

भाषा के प्रयोग में अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व रुचिकर बनाने लिए मुहावरे तथा लोकोक्तियों की बहुत उपादेयता है। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता, सहजता, गति व विलक्षणता आदि गुण स्वयं ही आ जाते हैं।

राजन शर्मा, जालंधर

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरे और लोकोक्ति में निम्नलिखित अंतर हैं:

1.मुहावरे का प्रयोग वाक्यांश रूप में होता है। जैसे अकल मारी जाना (उस समय मुझे कुछ सूझा ही नहीं, मेरी तो अकल ही मारी गयी थी) इस वाक्य में 'अकल मारी जाना' मुहावरा पूरा वाक्य न होकर वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

जबकि लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है। जैसे-बेटा! दोनों भाई मिलकर रहना क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं। इस वाक्य में 'एक और एक ग्यारह होते हैं लोकोक्ति अपने आप में पूरी है तथा वाक्य में उसकी अलग सत्ता विद्यमान है।

2 मुहावरों में लिंग, वचन आदि अनुसार परिवर्तन संभव है । जैसे - 'लड़का बगलें झाँकने लगा', 'लड़की बगलें झाँकने लगी', 'लड़के बगलें झाँकने लगे', 'लड़कियाँ बगलें झाँकने लगी'। किंतु लोकोक्तियों में परिवर्तन संभव नहीं। इसके किसी भी शब्द को घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता और न ही किसी शब्द को आगे-पीछे किया जा सकता है। जैसे-'एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है' लोकोक्ति कैसे भी, कहीं भी प्रयुक्त हो, ऐसे ही रहेगी।

3.मुहावरे केवल भाषा में सजीवता व चमत्कार उत्पन्न करते हैं जबकि लोकोक्ति का प्रयोग वक्ता/लेखक अपनी बात के समर्थन के लिए करता है।

राजन शर्मा, जालंधर

4. मुहावरे आमतौर पर 'ना' अंत वाले होते हैं। जैसे- अपनी खिचड़ी अलग पकाना, अँगूठा दिखाना आदि में अंत में 'ना' है किंतु लोकोक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं है।

5.मुहावरों में आमतौर पर क्रिया, दशा आदि की अभिव्यक्ति होती है जबकि लोकोक्ति में कोई न कोई सच्चाई अथवा अनुभव छिपा रहता है।

मुहावरे

1.अंगारों पर पैर रखना- (जानबूझकर मुसीबत में पड़ना)- अरे भाई, जो भी करो, सोच विचार कर करो। इस काम को करना अंगारों पर पैर रखना है।

2.अँगूठा दिखाना- (साफ़ मना करना)- जब मैंने उससे अपने रुपये माँगे तो उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

3.अपना उल्लू सीधा करना- (स्वार्थ/मतलब पूरा करना)- हमारी पार्टी तभी तो विकास नहीं कर पा रही क्योंकि सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।

4. अपनी खिचड़ी अलग पकाना- (सबसे अलग रहना)- सुमित्रा दफ्तर में किसी से बात करती, वह अपनी खिचड़ी अलग पकाना है।

5. अक्ल पर पत्थर पड़ना (सोच विचार न करना))-सोहन की अक्ल पर तो पत्थर पड़ गए हैं, उसे तो अपने भविष्य की कोई परवाह ही नहीं है।

राजन शर्मा, जालंधर

6.**आँखें चुराना (सामने न आना, कतराना)- जब से उसने मुझसे रुपये उधार लिए हैं, तब से वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।**

7.**आँखों में धूल झोंकना- (धोखा देना) चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।**

8. **आस्तीन का साँप- (कपटी मित्र)- योगेश को हरमेश पर बहुत विश्वास था, लेकिन वह तो आस्तीन का निकला।**

9.**इस कान सुनना उस कान उड़ा देना- (किसी व्यक्ति की बात पर ध्यान न देना)- वह बहुत ही लापरवाह है, इस कान सुनता है उस कान उड़ा देता है।**

10. **ईंट का जवाब पत्थर से देना- (मुँहतोड़ जवाब देना/कठोर साथ कठोरता का व्यवहार करना)- हनुमान ने रावण की लंका की ईंट से ईंट बजा दी थी।**

11. **उड़ती चिड़िया पहचानना- (अनुभवी होना, किसी बात को जान लेना) गुलाब राय को किसी बात में कम न समझना, वह तो उड़ती चिड़िया पहचान लेता है।**

12. **ऊपर की आमदनी- (इधर-उधर से फिटकरी हुई नाजायज रकम /भ्रष्टाचार से कमाई रकम)- ईमानदार और मेहनती व्यक्ति कभी भी ऊपरी आमदनी पर विश्वास नहीं करता।**

राजन शर्मा, जालंधर

13. **एक-एक रग जानना- (भली- भाँति परिचित होना)- तुम हर बार उससे हार जाते क्यों की वह तुम्हारी एक-एक रग जानता है ।**

14. **कच्चा चिट्ठा खोलना- (गुप्त बात प्रकट करना)- आजकल मीडिया भ्रष्ट लोगों का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देती है।**

15. **कफ़न सिर पर बाँधना- (मरने के लिए तैयार रहना)- भारतीय सैनिक हमेशा कफ़न सिर पर बाँधकर देश की रक्षा करते हैं।**

कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ

1.**अपना लाल गंवाय के दर-दर माँगे भीख- (अपनी वस्तु लापरवाही से नष्ट करके दूसरों से माँगते फिरना): सोमपाल ने अपनी सारी दौलत तो जुए और लॉटरी में गँवा दी और अब लोगों से उधार लेकर गुजारा करता है। किसी ने ठीक ही कहा है--अपना लाल गंवाय के दर-दर माँगे भीख।**

2. **अधूरा छोड़े सो पड़ा रहे- (जो कार्य बीच में ही छोड़ दिया जाता है वह प्रायः अधूरा रह जाता है) : सुनो, तुम जो भी काम शुरू करते हो उसे**

राजन शर्मा, जालंधर

बीच में ही छोड़कर किसी दूसरे काम में लग जाते हो। क्या तुम नहीं जानते--अधूरा छोड़े सो पड़ा रहे।

3.अपना कोढ़ बढ़ता जाय, औरों को दवा बताय- (जब कोई व्यक्ति दूसरों से जो कहे परन्तु उसको स्वयं न करे या उसका स्वयं लाभ न उठाए) : लाला जगतराम जी, तुम दूसरों को सुबह-शाम सैर करने का उपदेश देते रहते हो किन्तु सैर न करने के कारण तुम्हारी स्वयं की तोंद तो बढ़ती ही जा रही है। इसे कहते हैं--अपना कोढ़ बढ़ता जाय, औरों को दवा बताय।

4.आसमान से गिरा खजूर में अटका- (एक संकट से छूटकर बचकर दूसरे में फँस जाना): वह चोरी के मामले से छूटकर आया ही था कि हेराफेरी के मामले में फंस गया। इसे कहते हैं--आसमान से गिरा खजूर में अटका।

5.आँखों देखी सच्ची, कानों सुनी झूठी- (आँखों से देखी हुई बात सच होती है, कानों से सुनी हुई नहीं): केवल सुनी सुनाई बात के आधार पर मोहनचंद को चोर कहना ठीक नहीं है। क्या तुम नहीं जानते-आँखों देखी सच्ची, कानों सुनी झूठी?

राजन शर्मा, जालंधर

6.ऊँट किस करवट बैठता है- (नतीजा न जाने क्या हो); भारत और श्रीलंका के बीच क्रिकेट मैच के फाइनल मैच को जीतने में कड़ी होड़ लगी हुई है। देखें, ऊँट किस करवट बैठता है।

7. एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत - (सेहत बहुत बड़ा धन है): माँ ने अपनी पुत्री को कहा,'पढ़ाई के साथ-साथ अपनी सेहत का भी ध्यान रखो क्योंकि एक तंदुरुस्ती हजार नियामत होती है।"

8.ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर- (कठिन काम करने का निश्चय करके बाधाओं से न घबराना): अरी बहन ! जब नयी कोठी बनवानी शुरू कर ही दी है तो अब खर्चे से क्यों घबराती हो, ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर।

9. का वर्षा जब कृषि सुखाने- (असमय की सहायता लाभदायक नहीं होती) : अरे, चोर तो उसके घर से सब कुछ लूटकर भाग गये, अब पुलिस के आने से क्या फायदा। कहा भी है-का वर्षा जब कृषि सुखाने।

10. कथन नहीं, करनी चाहिए- (जब कोई इंसान बातें तो बहुत करता परन्तु करता कुछ भी नहीं): तुम हर बार बड़ी-बड़ी बातें करके हमारी

राजन शर्मा, जालंधर

वोटों से कॉलेज के प्रधान बन जाते हो किन्तु छात्रों की समस्याओं का कोई हल नहीं निकालते। याद रखो! हमें इस बार कथनी नहीं, करनी चाहिए।

11.कौआ कोयल को काली कहे- (जब कोई व्यक्ति स्वयं दोषी होने पर भी दूसरे को बुराई करे तो उसके लिए व्यंग्य से ऐसा कहा जाता है) उस पर स्वयं तो भ्रष्टाचार के दोष तय हो चुके हैं किन्तु वह दूसरों की सारा दिन बुराई करता रहता है, इसे कहते हैं-कौआ कोयल को कालो कहे।

12. क्या जन्म भर का ठेका लिया है ? (कोई भी इन्सान किसी को जीवन भर सहायता नहीं दे सकता): सुनो, जब तुम बेरोजगार थे तो उसने तुम्हें अपने घर पर आश्रय दिया था किन्तु अब नौकरी मिल जाने पर तो तुम्हें अपना ठिकाना ढूँढ़ ही लेना चाहिए। उसने तुम्हारा क्या जन्म भर का ठेका लिया है ?

13.काठ की हांडी बार-बार नहीं चड़ती- (कपटी व्यवहार सदैव नहीं किया जा सकता); पिछली बार तुम हमें धोखा देने में कामयाब हो गये थे किन्तु इस बार हम पूरी तरह सतर्क है। जानते नहीं--काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

राजन शर्मा, जालंधर

14.**कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर- (समय आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे को सहायता करना): एक दिन तुमने मेरी मदद की थी, आज मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ। किसी ने ठीक ही कहा है-कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर।**

15. **घर का भेदी लंका ढाए- (आपसी वैर विरोध घर का नाश कर देता है): विभीषण ने श्री रामचन्द्र से मिल कर रावण को मरवा कर लंका को नष्ट कराया था। सच है घर का भेदी लंका ढाए।**

शिक्षा विभाग,पंजाब

(मार्गदर्शक:- डॉ. सुनील बहल, असिस्टेंट डायरेक्टर एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब)

तैयार कर्ता:- राजन शर्मा, जालंधर व सुमन सहगल, जालंधर **शोधक:-** राजन, अमृतसर